मासिक पत्र-अगस्त 2020 (भाद्रपद मास) अंक-3

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥
हरिद्वार

॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥

श्रीकृष्णायन

जनकल्याण के लिए दीपक सावित्री हार्ट सेंटर के रूप में हुआ एक नया दीपक प्रज्वलित

निःस्वार्थ भाव से की गई जन-सेवा में जो सुख की प्राप्ति होती है वह अनमोल है। सुख-समृद्धि एवं प्रसन्नता पाने के लिए जन-सेवा के कार्यों की निरंतरता हमेशा जारी रहनी चाहिए। सेवा भावों को साकार करना एवं संकल्पित भावों के साथ जनकल्याण के कार्यों को पूर्ण करना ही सच्ची सेवा कहलाती है।

इसी सेवा भावना, संतों के आशीर्वाद एवं मोक्षदायिनी गोमाता के संरक्षण में जनकल्याणार्थ रुड़की, हरिद्वार में दीपक सावित्री ग्लोबल हार्ट केयर सेंटर का शुभारंभ किया गया। इस हार्ट सेंटर में देश के जाने-माने चिकित्सा संस्थान एम्स और सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में अपनी भूतपूर्व सेवाएं दे चुके डॉक्टर महेंद्र कुमार (एम.डी.) कार्डियोलोजिस्ट पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ रोगियों का इलाज करेंगे।

डॉक्टर महेंद्र कुमार एक कुशल एवं प्रतिष्ठित चिकित्सक ही नहीं अपितु एक प्रबुद्ध, दानी एवं पूज्य गुरुदेव के प्रति संपूर्णता से समर्पित भक्त भी हैं। जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन अपने पूज्य गुरुदेव एवं गोमाता की सेवा में समर्पित कर दिया है तथा निःस्वार्थ भाव से जन-सेवा कर अपना भगवत प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। इस महा-सेवा के यज्ञ को पूर्ण करने के लिए ग्लेज़ ट्रेडिंग इंडिया प्रा. लि. के फाउंडर-डायरेक्टर श्री चेतन हांडा एवं श्री संजीव छिब्बर व समस्त ग्लेज़ परिवार पूरी तत्परता के साथ आगे बढ़कर इस पुनीत कार्य को मूर्त रूप देने में जुटा है।

श्री चेतन हांडा एवं श्री संजीव छिब्बर धर्मात्मा प्रवृति के इंसान होने के साथ-साथ मातृ-पितृ, गुरु एवं गो-भक्त भी हैं। इनका प्रयास है कि जगत में सनातन धर्म की स्थापना हो। ये भगवद्गीता को अपना आदर्श मानते हैं तथा अपने जीवन में उसी आदर्श का पालन करने वाले गुणी एवं प्रबुद्ध इंसान भी हैं। इनकी असीम इच्छा है कि सभी सनातन धर्मी अपने घरों में गीता और रामायण जैसे महान ग्रंथों का अनुसरण करें, उनके विचारों को आत्मसात करें तथा पूरे विश्व में इन ग्रंथों का प्रचार-प्रसार हो।

इसी महान सोच एवं उच्च विचारों को कार्यरूप देकर ये दोनों महापुरुष एक सूर्यवंशी राजा का आदर्श स्थापित करने के साथ-साथ भगवत प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त कर रहे हैं।

रुड़की, हरिद्वार में स्थापित यह पहला हार्ट सेंटर है। इससे पहले यहां के आसपास के लोगों को दिल की बीमारी के इलाज के लिए दिल्ली या ऋषिकेश जाना पड़ता था। तब श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति के संतों ने लोगों की इस परेशानी को समझा और उनके निवारण के लिए प्रयास किए। यह हार्ट सेंटर उसी का परिणाम है। इस हार्ट सेंटर को भविष्य में एक सुपर मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल में बदलने की भी योजना है।

कोरोना काल में गोधन की सेवा कर स्वास्थ्य के साथ-साथ लाएं अर्थव्यवस्था में भी बदलाव

कोरोना काल के इस दौर में अब हमारे पास फिर से एक मौका है कि हम कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को अपनाएं, गोमाता की सेवा करें और पहले की तरह अपने जीवन को आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक तौर पर सुखद एवं संपन्न बनाएं...

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था है जिसके तहत हम खेती व पशुओं की सहायता से अपने आर्थिक हित पूरे करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं।

इसी क्रम में पुरातन काल से ही गोमाता हमारी अर्थव्यवस्था

और गृहस्थ जीवन का केंद्र बिंदु रही हैं, जिन्हें परिवार के एक अहम सदस्य के रूप में अपनाया जाता है। संपूर्ण परिवार मिलकर जहां गाय का भरण-पोषण करता है वहीं गाय भी परिवार के जीवन निर्वहन हेतु मुख्य आधार बनती है। पुराने समय में तो जिसके घर गोमाता होती थी उस व्यक्ति की सामाजिक हैसियत ही उसकी जमीन और गोधन के आधार पर आंकी जाती थी।

लेकिन समय बदला और लोग गांव-कस्बों से निकलकर महानगरों की ओर पलायन कर गए, जिसके चलते गोमाता और कृषि दोनों ही हाशिए पर आ गए। तब लोगों ने प्राकृतिक संसाधनों को ताक पर रखकर प्रकृति को नुकसान पहुंचाने वाली अर्थव्यवस्था पर जोर दिया, जिससे इसका संतुलन बिगड़ने लगा और आज कोरोना जैसी महामारी भी कहीं न कहीं उसी बदलाव का प्रतिफल है।

अब जब शहरों में मजदूर बनकर आए ग्रामीण इस महामारी के भय से

वापस अपने गांवों की ओर पलायन कर रहे हैं तो सबके सामने बड़ा सवाल यही है कि इनका जीवनयापन कैसे हो पाएगा? इनके घर की आर्थिक व्यवस्था को कौन संभालेगा?

आज इन सब सवालों का जवान न तो सरकारों के पास है और न ही अर्थशास्त्रियों के। लेकिन हमेशा की तरह इस बार भी इसका सही जवाब प्रकृति के पास है और प्रकृति हमेशा से यही दोहराती आई है कि जड़ों की ओर लौटो।

जी हां, आज हमें वापस अपनी जड़ों की ओर लौटकर उसी जीवनशैली में जाना होगा जो हमें पहले की तरह आर्थिक तौर पर संबल दे सकती है।

आज उन सभी पलायन करने वाले ग्रामीणों के पास मौका है कि वो एक बार फिर कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को अपनाएं, एक बार फिर गोमाता की सेवा करें और पहले की तरह अपना जीवन आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक तौर पर संपन्न बनाएं।

हम गोधन के संरक्षण व संवर्धन से श्रेष्ठ समाज के विकास के लक्ष्य के साथ ही तीव्र आर्थिक विकास के लक्ष्य को भी सरलतापूर्वक पूरा सकते हैं। आज भी आस्ट्रेलिया, डेनमार्क जैसे कई राष्ट्र अपने आर्थिक विकास हेतु दुग्ध उत्पादन पर निर्भर हैं। ऐसे में हम भी गोमाता की सेवा करके राष्ट्र के आर्थिक विकास में एक नया कदम बढ़ा सकते हैं।

गो-पालन के माध्यम से हम न केवल दुग्ध क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकते हैं, बल्कि दवा उत्पादन, ऑर्गेनिक खेती, खाद, जैविक उत्पादन, गैस उत्पादन आदि के माध्यम से आर्थिक तौर पर भी संपन्न बन सकते हैं। हम गो-पालन, शिक्षा एवं अनुसंधान, गो-उत्पाद आदि को विकास का आधार बनाकर अर्थव्यवस्था का तीव्र विकास सुनिश्चित कर सकते हैं।

कुल मिलाकर आज हमें गाय के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण के साथ ही आर्थिक व वैज्ञानिक सोच का विकास भी करना होगा।

प्राचीन काल से ही देशी गाय को पूरे भारत वर्ष में माता की तरह पूजा जाता है। यह करुणा-वश या प्रेम-भाव में बहकर नहीं किया जाता। अपितु हमारे पूर्वजों ने देशी गाय के महत्व को समझा एवं सब कुछ जानने के बाद ही वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि गाय में पूरी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संभालने की क्षमता है। आयुर्वेद में प्राचीन काल से देशी गाय के दूध, घी, दही, गोमूत्र, गोमय (गोबर) आदि का जगह-जगह पर महत्व बताया गया है। इन द्रव्यों को आयुर्वेद में गव्य कहा जाता है।

यही पांचों गव्य मिलकर पंचगव्य बनते हैं। आज हमारा भारत वर्ष अनगिनत समस्याओं से जूझ रहा है। इस वर्तमान अर्थव्यस्था में गो-पालन एवं पंचगव्य ही एकमात्र ऐसी शक्ति है, जो हमारे गांवों को पुनः आत्मनिर्भर बना सकती है।

पंचगव्य एवं गो-पालन ग्रामीण कृषि, ऊर्जा स्रोत, चिकित्सा, घरेलू उपयोगी वस्तुएं, रोजगार आदि का मूल आधार बनें तो हमारे ग्रामीण क्षेत्रों का नजारा ही बदल सकता है।

गोधन एवं कृषि

देशी गाय के गोबर से सर्वोत्तम खाद तथा गोमूत्र से कीट नियंत्रक औषधियां निर्मित होती हैं, यह एक अभि-प्रमाणित तथ्य है। गो आधारित कीटनाशक तथा जैविक खाद कम खर्च में तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ही तैयार किए जा सकते हैं। यह भी प्रमाणित हो चुका है कि जैविक खाद एवं कीटनाशक जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं और पर्यावरण मित्रवत भी हैं। इनसे उत्पादित पदार्थों की गुणवत्ता, पौष्टिकता एवं प्रति यूनिट उत्पादन क्षमता में निरंतर वृद्धि होती है। जैविक खेती गांवों के बेरोजगार लोगों को रोजगार के नए अवसर प्रदान कराती है। कई पश्चिमी देश खेती की रासायनिक विधि को छोड़कर जैविक खेती की ओर बढ़ रहे हैं।

भारत में कृषि क्षेत्र छोटे-छोटे वर्गों में बंटा हुआ है, जहां हरेक के लिए ट्रैक्टर रख पाना संभव नहीं है। कई शोधों द्वारा यह पता चला है कि ट्रैक्टर के प्रयोग से हमारी धरती की उर्वरा शक्ति कम हो रही है तथा यह प्रदूषण का भी कारक है। ऐसे में बैलचालित आधुनिक ट्रैक्टर द्वारा इन सब समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। यह भी प्रमाणित हो चुका है कि भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बैलचालित ट्रैक्टर ही आर्थिक तौर पर सही है।

ग्रामीण ऊर्जा का स्रोत

भारत में कृषि, व्यावसायिक व घरेलू उपयोग में इस्तेमाल होने वाली ऊर्जा का मुख्य स्रोत पैट्रोलियम है। इसके लिए हमें विदेशों पर आश्रित रहना पड़ता है, जबकि देश भर में गोवंशीय पशुओं से हमें लगभग 11,500 लाख टन गोबर प्रतिवर्ष मिलता है। यदि इस गोबर से बायो गैस प्लांट संचालित किया जाए तो हमारी अधिकांश ऊर्जा की समस्या समाप्त हो जाएगी और हमें किसी पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा।

गोबर गैस संयंत्र अनुपयोगी गोवंश के गोबर से भी चलाया जा सकता है। इससे प्राप्त गैस का प्रयोग ईंधन व रोशनी के लिए किया जा सकता है। ऐसा करके वनों की कटाई के दबाव को कम किया जा सकता है तथा पैट्रोलियम की खपत भी कम की जा सकती है। वहीं ग्रामीणों को बिना धुएं का स्वच्छ ईंधन मिल जाएगा। गोबर गैस संयंत्र से जेनरेटर चलाकर बिजली भी पैदा की जा सकती है। कृषि के सभी कार्यों के साथ-साथ भार-वाहन यातायात का मुख्य स्रोत गांवों में बैल ही हैं। बैलचालित ट्रैक्टर, बैलचालित जेनरेटर तथा बैलगाड़ी के प्रयोग से गांव की वर्तमान स्थिति को बदला जा सकता है जोकि पैट्रोलियम पर आधारित है। इनके प्रयोग से रोजगार के अवसर भी खुलेंगे।

वहीं बायोगैस बॉटलिंग पर भी आजकल शोध चल रहे हैं। वैज्ञानिकों ने इस पर भी काफी सफलता हासिल कर ली है। इस शोध के पूरा हो जाने पर बायोगैस को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए पाइप लाइन की जरूरत नहीं पड़ेगी।

पंचगव्य चिकित्सा

दिन-प्रति-दिन बढ़ती बीमारियों के चलते दवाओं, डॉक्टरों और अस्पतालों पर आजकल करोड़ों रुपए खर्च हो रहे हैं। फिर भी रोग और रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। वहीं गांवों के गरीब तबके के लोग महंगी आधुनिक चिकित्सा कराने में असमर्थ हैं। ऐसे में अब लोग आयुर्वेद की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। आयुर्वेद शास्त्र में गोदुग्ध,

गोबर से बना दिया वैदिक प्लास्टर

हरियाणा के डॉक्टर शिवदर्शन मलिक ने देशी गाय के गोबर से एक ऐसा वैदिक प्लास्टर तैयार किया है, जिसके इस्तेमाल से सस्ते और ईको-फ्रैंडली घर बनाए जा सकते हैं। देशी गाय के गोबर में सबसे ज्यादा प्रोटीन होता है, जो घर की हवा को शुद्ध रखने का काम करता है, इसलिए वैदिक प्लास्टर में देशी गाय के गोबर का इस्तेमाल किया गया है। देशी गाय के गोबर में जिप्सम, ग्वारगम, चिकनी मिट्टी आदि मिलाकर इसका वैदिक प्लास्टर बनाया जाता है जो अग्निरोधक एवं ऊष्मा-रोधी होता है। इस प्लास्टर के जरिए घर को बनाने में लागत भी बेहद कम आती है।

मोक्षदायिनी देशी गोमाता एवं जर्सी गाय में अंतर

हमारे मन में अकसर यह विचार आता है कि हम देशी गोमाता और जर्सी गाय की पहचान कैसे कर पाएंगे। आपके मन में उठने वाले इन्हीं सवालों के जवाब हम यहां देने जा रहे हैं जिनके जरिए आप देशी गोमाता के गुणों और उसके रूप को देखकर समझ जाएंगे।

देशी गोमाता

- समुंद्र मंथन से निकलने वाले 14 रत्नों में से एक रत्न गोमाता भी हैं।
- गोमाता की गर्दन पर गलकंबल झालर होती है।
- माथा (शीश) उठा हुआ एवं सींग सामान्यतः बड़े होते हैं।
- जब रंभाती हैं तो 'मां' शब्द का स्पष्ट उच्चारण सुनाई देता है।
- दूध साधारण मात्रा में देती हैं जो पीलापन लिए स्वर्ण के समान होता है।
- पीठ पर उभरा हुआ कूकांद होता है, जिसमें सूर्यकेतु नाड़ी होती है।
- सूर्यकेतु नाड़ी के माध्यम से सूर्य तथा अन्य ग्रहों की ऊर्जा संग्रहित कर गव्यों के माध्यम से अमृत रूप में देती हैं।
- देशी गोमाता ए-2 श्रेणी का दूध देती हैं जो पचने में सुपाच्य, गुणों में अमृत के समान, आरोग्यदायक तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाला होता है।

जर्सी गाय

- यह सुअर के वर्ण संकरण से बनाया गया जीव है।
- इसकी पीठ सीधी एवं सपाट होती है।
- गर्दन पर झालर न के बराबर होती है।
- माथा (शीश) झुका हुआ एवं सींग सामान्यतः छोटे या बिल्कुल नहीं होते हैं।
- स्वभाव भावनाहीन होता है।
- दूध भरपूर देती है जोकि सफेद रंग का होता है।
- सूर्यकेतु नाड़ी नहीं होती है। अतः यह एक सामान्य जीव मात्र है।
- यह ए-1 दूध देती है, जिससे ह्रदयघात, अस्थमा, कैंसर, डायबिटीज और लीवर की बीमारी होती है।

दही, घी, गोबर, गोमूत्र की स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन के संबंध में असीम महिमा वर्णित की गई है। अब विज्ञान भी गोबर व गोमूत्र के गुणों को समझने लगा है। प्राचीन काल से ही अधिकतर सभी रोगों के इलाज पंचगव्य चिकित्सा में मौजूद हैं। इससे संबंधित कई प्रमाण वैज्ञानिकों ने पेश भी किए हैं। गोमूत्र में ताम्र, लौह, कैल्शियम, फास्फोरस व अन्य खनिज जैसे कार्बोलिक एसिड, पोटाश और लैक्टोज नामक तत्व मिलते हैं। वहीं गोबर में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, आयरन, जिंक, मैग्नीज, कॉपर, बोरीन आदि तत्व पाए जाते हैं। इन तत्वों के कारण गोमूत्र-गोबर से विविध प्रकार की औषधियां बनती हैं और ये सभी प्रकार के रोगों पर काम करती हैं।

गोदुग्ध एवं मनुष्य का पोषण

देशी गाय के दूध को किसी भी अन्य दूध के मुकाबले ज़्यादा श्रेष्ठ माना है इसलिए आज भी डॉक्टर नवजात शिशुओं को बाजार का डब्बा बंद दूध पिलाने के बजाय गाय का दूध पिलाने की सलाह देते हैं। गाय के दूध में वसा, कार्बोहाइट्रेट, प्रोटीन के अलावा अन्य एंजाइम पाए जाते हैं जोकि हमारे भोजन को सुपाच्य बनाते हैं। धरती पर दूध ही एक ऐसा तत्व है जिसे पूर्ण आहार माना गया है। इसमें हमारे शरीर के विकास के लिए आवश्यक सभी तत्व उपलब्ध होते हैं।

पंचगव्य का घरेलू उपयोगी वस्तुओं में प्रयोग

गोमूत्र व गोमय की विशिष्टताओं के कारण न केवल इनका प्रयोग रोगों के शमन के लिए किया जाता है, बल्कि इनसे अनेकों ऐसे उत्पाद तैयार किए जाते हैं जोकि कुटीर उद्योग एवं ग्रामोद्योग का आधार बन सकते हैं। इनसे त्वचा रक्षक साबुन, दंत-मंजन, डिस्टेंपर, धूपबत्ती, फिनाइल, शैंपू, उबटन, तेल, मच्छर

गोशाला की प्रमुख गतिविधियां

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति (हरिद्वार) की एक नई शाखा बनहारी (रानी घाट) में खुल गई है। करीब दस हजार देशी गोमाताओं की सेवा-क्षमता से लैस इस नई गोशाला के खुलने से अब और अधिक संख्या में देशी गायों की सेवा रक्षा की जा सकेगी।

उपलब्धियां

गोमाता के भोजन और पोषण के लिए इस बार तीन सौ टन भूसा खरीदा गया है ताकि देशी गोवंश को वर्ष भर पौष्टिक आहार मिलता रहे।

गोशाला के निकट रहने वाले निवासियों को इस आपातकाल के समय मुफ्त राशन का वितरण किया गया।

नई योजनाएं हुईं साकार

- उत्तराखंड में पिली पड़ाव गोशाला
- रानीघाटी में बन्हेरी गोशाला
- गैंडीखाता, हरिद्वार में दो हजार देशी गायों के बैठने के लिए टीनशेड की व्यवस्था।

सभी दानदाताओं से अपील

कोराना वायरस की इस महामारी का असर सभी लोगों पर हुआ है। अर्थव्यवस्था से लेकर कामकाज तक पर इसका व्यापक असर हुआ है। इसके असर से सभी प्राणी प्रभावित हैं। हजारों गोमाताओं की सेवा के लिए जो दान आप दानवीरों द्वारा किया जा रहा था, वह इस समय अति-आवश्यक है। क्योंकि गोरक्षकों और गोमाताओं के भोजन का निर्वाह करना भी जरूरी है। हमारी आप सभी प्रबुद्धजनों और दानवीरों से यही अपील है कि संकट की इस घड़ी में धैर्य धारण करके सुरक्षित रहें और दान करते रहें क्योंकि संकट में दान देने वालों का प्रभू भी साथ देता है।

इस समय हमें आपके सहयोग की अति-आवश्यकता है आप आगे बढ़कर अपने पहचान वालों को भी गोसेवा करने के लिए प्रोत्साहित करें कम से कम एक गोमाता की सेवा का संकल्प लेकर ईसीएस फार्म भरकर मासिक/वार्षिक अपना सहयोग दें।

विनाशक, मरहम आदि तैयार किए जाते हैं।

इन सभी वस्तुओं का उत्पादन गोशालाएं आयुर्वेद के आधार पर कर रही हैं, जिनका संतुष्टी विश्लेषण भी कराया जाता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इन उत्पादों से 80 से 90 प्रतिशत उपभोक्ता संतुष्ट हैं तथा सभी ने इन वस्तुओं के अनेक फायदे भी बताए हैं।

गोवंश एवं रोजगार

उपरोक्त सभी तथ्यों से यह स्पष्ट हो चुका है कि अगर गोवंश को ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार बना लिया जाए तो ग्रामीण क्षेत्रों की कई समस्याओं के साथ रोजगार की सबसे

बड़ी समस्या भी दूर हो जाएगी और फिर से गांव आत्मनिर्भर हो जाएंगे और जो अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी, वह फिर से कायम हो जाएगी।

तो आज और अभी से हम कृषि और गोसेवा की शरण में जाकर अपने स्वास्थ्य व टूटती अर्थव्यवस्था में नई जान फूंक सकते हैं। आइए मिलकर गोमाता के आशीर्वाद से इस विपरीत समय का सामना करें और सुखमय जीवन की ओर लौटें।

अन्य शाखाएं एवं सेवा प्रकल्प

उत्तराखंड

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
गांव-बसोचांदपुर (गैंडीखाता)
ज़िला-हरिद्वार, उत्तराखंड
पिन कोड-246663

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
पोस्ट ऑफिस, पीली पड़ाव,
जिला - हरिद्वार

बायो-सीएनजी प्लांट
पोस्ट ऑफिस, नौरंगाबाद,
जिला - हरिद्वार
khad@krishnayangauraksha.org

उत्तर प्रदेश

गांव-सबलगढ़ (भागूवाला)
जिला - बिजनौर, उत्तर प्रदेश
पिन कोड-246732

गांव- बरला
टोल टैक्स के पास , बरला हापुड़ हाईवे
जिला - मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)
पिन- 246732

मध्य प्रदेश

आदर्श गोशाला
लाल टिपारा , ग्वालियर, मध्य प्रदेश
पिन कोड-474006

श्री रेवा भागीरथी गोशाला खेरीघाट
रामगढ़, जिला - खरगोन (मध्य प्रदेश)

श्री कृष्णायन देशी गोरक्षा गोलोक धाम सेवा समिती
राम जानकी मंदिर, रानीघाट (बरहाना)
जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

स्वामी ईश्वर दास जी महाराज
(अध्यक्ष)
मोबाइल: 9412902268
स्वामी गणेशानंद जी महाराज
(सचिव)
मोबाइल: 8958942681